ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-5 अंक : 60
सहयोग शुल्क : रु. 1 / दिसंबर : 2021

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

विकलांगता दिमाग में होती है,
शरीर में कभी नहीं...
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

जितनी विकलांगता तुम में है उससे कही ज्यादा
क्षमता आप में इन चुनौतीयों को पार करने की है...
- प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

हम सब जानते है की हर एक जीव का जीवन संघर्ष से ही शुरु होता है । जन्म से लेकर मृत्यु तक एक संघर्ष है । लेकीन साहसी, दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति इन संघर्ष का सामना भी मुस्कुराकर करते है । जीवन में कदम-कदम पें आनंवाली बाधाए एवं चुनौतियों से वो कभी डरते नही है मगर लडते है । हमे भी जीवन में आगे बढने केलिए हमारी दिव्यांगता को कमजोरी नही बनाना है । यहीं कमजोरी को शक्ति के रुप से विकसीत करना है क्योंकी इंसान की शक्ति शरीर में नही उनकी आत्मा में होती है और आत्मा कभी विकलांग नही होती । जीवन की राह पे आप कभी गिरोगे जरुर लेकीन अगर आप में द्रढ इच्छाशक्ति और बुलंद हौंसला है तो आप इन विपरीत परिस्थितिओं में भी खुद ही संभल जाओगे । शरीर की विकलांगता सिर्फ हमारे शरीर को खत्म करती है, हमारे जज्बें को नही । अगर भगवान ने आपको चुना है चुनौतियों पार करने के लिए तो आप एक शानदार इंसान हुए जिसे भगवानने स्वयं चूना है...

“कभी भी निराश मत होना अपनी हाथों की लकीरों को देखकर क्योंकी किस्मत की लकीरें तो उनकी भी होती है जिनके हाथ नही होते... !!”

आप सभी को निवेदन है की “दिव्ययांग सेतु” पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु आपके आसपास दिव्यांगजनो के अनुलक्ष में हुए कार्यक्रम या कोई दिव्यांग व्यक्ति की जानकारी का ब्योरा भी आप हमें भेज सकते है । हम इसे प्रकाशित करेंगे ।

आओ आप भी दिव्यांगजनो के इस सेवायज्ञ में हमारा साथ दें...

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

दिसंबर - 2021, पृष्ठ संख्या - 16

वर्ष - 5 अंक - 60

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

दिव्यांगों की मदद के लिए पद्मश्री से सुम्मानित हुए रामकृष्णन, खुद-44 साल से व्हीलचेयर पर हैं रामकृष्णन

विकट परिस्थितियों में भी स्वयं को पहचानकर मानवता के लिए कार्य करने वाले प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एस. रामकृष्णन को पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। राष्ट्रपति भवन में सोमवार (8 अक्टूबर) को आयोजित एक समारोह में रामकृष्णन को यह सम्मान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने प्रदान किया। दिव्यांग रामकृष्णन व्हीलचेयर से इस सम्मान को लेने पहुँचे। उनके योगदान को देखकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

तमिलनाडु के तिरुनेलवेली के रहने वाले रामकृष्णन का समाज में किया गया कुछ ऐसा योगदान है, जिसके कारण सरकार ने इस सम्मान के लिए उन्हें चुना। रामकृष्णन स्वयं लकवाग्रस्त हैं और चलने में असमर्थ हैं, इसके बावजूद वह दिव्यांग लोगों के पुनर्वास में मदद करने का सराहनीय काम पिछले 40 वर्षो से करते आ रहे हैं।

रामकृष्णन जब 20 साल के थे, तब वह एक हादसे का शिकार हो गए थे। इस हादसे के बाद वह लकवाग्रस्त हो गए। लकवाग्रस्त होने के बाद उन्होंने दिव्यांग लोगों के दर्द को महसूस किया और जाना कि ऐसे लोगों को समाज के मुख्यधारा में बनाए रखने के लिए उनके पुनर्वास की सख्त आवश्यकता है। इसके लिए उन्होंने दिव्यांग लोगों की मदद करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने एक संस्था भी बनाया और इसे लोगों की मदद का माध्यम बनाया। इसके बाद वे पीछे मुड़कर नहीं देखे।

रामकृष्ण पिछले 44 साल से व्हीलचेयर पर हैं, लेकिन जरुरतमंदों के सेवा में वे हमेशा आगे रहते हैं। रामकृष्णन ने 1981 में अमर सेवा संगम नाम की संस्था की शुरुआत की थी। इस संस्था के माध्यम से वे आसपास के इलाके लोगों की मदद करते हैं। आज यह संगठन अपने सेवा कार्यो के लिए लोगों के बीच बेहद सम्मानित नाम बन चुका है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र के दिव्यांगों पर विशेष ध्यान दिया। ग्रामीण क्षेत्र के दिव्यांगों के पुनर्वास के लिए अभी भी बड़े पैमाने पर काम किए जाने की जरुरत है।

रामकृष्णन का संगठन अमर सेवा संगम गाँवों में पोलियो शिविर का समय-समय परआयोजन के साथ-साथ एकीकृत स्कूल भी संचालित करता है। इस स्कूल में सामान्य बच्चों के साथ-साथ दिव्यांग बच्चे भी पढ़ाई करते हैं। उनके किये कार्यों को देखते हुए रामकृष्णन को दिव्यांगों का मसीहा कहा जाने लगा।

साल 1975 में इंजीनियरिंग के छात्र रामकृष्णन 20 साल के थे, तब उन्होंने नौसेना में भर्ती होने की सोची। वह तमाम परीक्षा को उत्तीर्ण करने के बाद शारीरिक टेस्ट के लिए गए। ऐसे ही एक टेस्ट के दौरान उन्हें 15 फीट ऊँचे पेड़ से छलाँग लगाने को कहा गया। छलाँग के दौरान उनकी रीढ़ की हड्डी टूट गई और गर्दन से नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। इसके बाद उन्होंने अपने माता-पिता के जमीन पर एक स्कूल खोला। पाँच बच्चों के साथ शुरु हुए इस स्कूल में आज तकरीबन 300 बच्चे पढ़ते हैं।

विश्व दिव्यांग दिवस - 3 दिसंबर

हर साल 3 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकलांग व्यक्तियों का अंतरराष्ट्रीय दिवस मनाने की शुरुआत हुई थी और 1992 से संयुक्त राष्ट्र के द्वारा इसे अंतरराष्ट्रीय रीती-रिवीज़ के रुप में प्रचारित किया जा रहा है । विकलांगों के प्रति सामाजिक कलंक को मिटाने और उनके जीवन के तौर-तरीकों को और बेहतर बनाने के लिए उनके वास्तविक जीवन में बहुत सारी सहायता को लागू करने के द्वारा तथा उनको बढ़ावा देने के लिए साथ ही विकलांग लोगों के बारे में जागरुकता को बढ़ावा देने के लिए इसे सालाना मनाने के लिये इस दिन को खास महत्व दिया जाता है । 1992 से, इसे पूरी दुनिया में ढ़ेर सारी सफलता के साथ इस वर्ष तक हर साल से लगातार मनाया जा रहा है । वर्ष 1976 में संयुक्त राष्ट्र आम सभा के द्वारा "विकलांगजनों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष" के रुप में वर्ष 1981 को धोषित किया गया था । अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर विकलांगजनों के लिए पुनरुद्धार, रोकथाम, प्रचार और बराबरी के मौकों पर जोर देने के लिए योजना बनायी गयी थी । समाज में उनकी बराबरी के विकास के लिए विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों के बारे में लोगों को आगरुक करने के लिए, सामान्य नागरिकों की तरह ही उनके सेहत पर भी ध्यान देने के लिए और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए " पूर्ण सहभागिता और समानता" का थीम विकलांग व्यक्तियों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के उत्सव के लिए निर्धारित किया गया था । सरकारी और दूसरे संगठनों के लिए निर्धारित समय-सीमा प्रस्ताव के लिए संयुक्त राष्ट्र आम सभा के द्वारा "विकलांग व्यक्तियों के संयुक्त राष्ट्र दशक " के रुप में वर्ष 1983 से 1992 को घोषित किया गया था जिससे वो सभी अनुशंसित क्रियाकलापों को ठीक ढंग से लागु कर सकें ।

विश्व विकलांग दिवस को मनाना क्यों आवश्यक है

ज्यादातर लोग ये भी नहीं जानते कि उनके घर के आस-पास समाज में कितने लोग विकलांग हैं । समाज में उन्हेंबराबर का अधिकार मिल रहा है कि नहीं । अच्छी सेहत और सम्मान पाने के लिए तथा जीवन में आगे बढ़ने के लिए उन्हें सामान्य लोगों से कुछ सहायता की जरुरत है । लेकिन, आमतौर पर समाज में लोग उनकी सभी जरुरतों को नहीं जानते हैं । आँकड़ों के अनुसार, ऐसा पाया गया है कि, लगभग पूरी दुनिया के 15% लोग विकलांग हैं ।

इसलिए, विकलांगजनों की वास्तविक स्थिति के बारे में लोगों को जागरुक करने के लिए इस उत्सव को मनाना बहुत आवश्यक है । विकलांगजन " विश्व की सबसे बड़ी अल्पसंख्यकों" के तहत आते हैं और उनके लिए उचित संसाधनों और अधिकारों की कभी के कारण जीवन के सभी पहलुओं में ढ़ेर सारी बाधाओं का सामना करते हैं ।

वोइस टू दिव्यांग

विश्व विकलांग दिवस को मनाने का लक्ष्य

- इस उत्सव को मनाने का महत्वपूर्ण लक्ष्य विकलांगजनों के अक्षमता के मुद्दे की ओर लोगों की जागरुकता और समझ को बढ़ाना है।
- समान में उनके आत्म-सम्मान, लोक-कल्याण और सुरक्षा की प्राप्ति के लिए विकलांगजनों की सहायता करना।
- जीवन के सभी पहलुओं में विकलांगजनों के सभी मुद्दे को बताना।
- इस बात का विश्लेषण करें कि सरकारी संगठन द्वारा सभी नियम और नियामकों का सही से पालन हो रहा है या नहीं।
- समाज में उनकी भूमिका को बढ़ावा गेना और गरीबी धटाना, बराबरी का मौका प्रदान कराना, उचित पुनर्सुधार के साथ उन्हें सहायता देना।
- उनके स्वास्थ्य, सेहत, शिक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा पर ध्यान केन्द्रित करना।

विश्व विकलांग दिवस कैसे मनाया जाता है

उनकी सहायता और नैतिकता को बढ़ाने के लिए साथ ही साथ विकलांगजनों के लिए बराबरी के अधिकारों को सक्रियता से प्रसारित करने के लिए उत्सव के लिए पूरी दुनिया सें लोग उत्साहपूर्वक योगदान देते हैं। कला प्रदर्शनी के आयोजन के द्वारा इस महान उत्सव को मनाया जाता है जो उनकी क्षमताओं को दिखाने के लिए विकलांग लोगों के द्वारा बनायी गयी कलाकृतियों को बढ़ावा देता है।

समाज में विकलांगजनों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जागरुकता को बढ़ने के साथ ही विकलांग लोगों की कठिनाईयों की ओर लोगों का ध्यान खींचने के लिये विरोध क्रियाओं में सामान्य लोग भी शामिल होते हैं।

विश्व दिव्यांग दिवस (विश्व विकलांग दिवस 2020) की थीम -

संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक वेबसाइट www.un.org के मुताबिक इस साल 2020 दिव्यांग दिवस की थीम थी - "बेहतर पुनर्निमाण: कोविड-19 के बाद की दुनिया में विकलांग व्यक्तियों के लिए समावेशी, सुलभ और अनुकूल माहौल हो।" विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस थीम का समर्थन किया है और कोविड-19 महामारी के दौरान दिव्यांग व्यक्तियों की जरुरत पर बल दिया गया था।

रेलवे की शानदार पहल, दिव्यांगों को मिलेगा रोजगार

रेलवे ने दिव्यांग यात्रयों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक पहल की है । हुनरमंद दिव्यांगों की पेंटिंग को हरिद्वार, ऋषिकेश और देहरादून के रेलवे स्टेशन की दीवारों पर लगाया जाएगा । इन पेंटिंग पर मोबाइल फोन नंबर भी लिखा होगा । जिससे फोन कर आप भी अपने धरों की सजावट के लिए पेटिंग खरीद सकते हैं ।

रेलवे एक तरफ जहां सफर के दौरान दिव्यांगों की हर सुख सुविधा का ध्यान रख रहा है । वहीं दूसरी तरफ उन्हें रोजगार भी मुहैया कराने की तैयारी कर रहा है । दिव्यांग अपनी मेहनत के दम पर समाज में एक अलग ही मुकाम हासिल कर रहे हैं । अब इन दिव्यांगों के हुनर को रेलवे स्टेशन के परिसर की दीवारों पर लगाया जाएगा । जिससे उनकी प्रतिभा निखरकर सामने आ सके । इसके लिए रेलवे ने दिव्यांगों की आय बढ़ाने की ओर से बनाए चित्रों को प्रमुख स्टेशनों पर लगाने की योजना तैयार की है । अधिकांश चित्र पर्यावरण से जुड़े होंगे । जिन्हें स्टेशन परिसर की दीवारों पर लगाया जाएगा । वहीं दिव्यांगों के द्वारा बनाए गए महापुरुषों के चित्रों के कार्यालय में महान पुरुषों का फोटो लगाया जाएगा । चित्र के नीचे मोबाइल नंबर भी अंकित होगा, कोई भी यात्री फोन कर दिव्यांग कलाकार द्वारा बनाई गई तस्वीर मंगा सकता है ।

आकार के आधार पर तय है कीमत

रेलवे बोर्ड ने ऐसे दिव्यांगों को बढ़ावा देने के लिए चित्रकार के आकार के आधार पर कीमत भी तय कर रखी है । दिव्यांगों की ओर से बनाए गए चित्रों की बिक्री करने के लिए कई स्वंयसेवी संगठन काम करते हैं । दिव्यांगों के लिए काम करने वाले एक स्वयसेवी संगठन के लोग प्रवर मंडल वाणिज्य प्रबंधक से मिले थे ।

घर बैठे मतदान कर सकेंगे बुजुर्ग व दिव्यांग

उम्र के 80 बसंत देख चुके बुजुर्गो व 18वर्ष की उम्र पूरी कर चुके सभी दिव्यांगो को आगामी विधानसभा चुनाव में मतदान के लिए बूथ तक नहीं जाना होगा । इस श्रेणी के मतदाता घर बैठे अपनी पसंद के प्रत्याशी को वोट डाल सकेंगे । इस संबंध में निर्वाचन आयोग का निर्देश मिलने के बाद जिला प्रशासन दायरे में आने वाले मतदाताओं की सूची अपडेट करने व अन्य तैयारियों में जुटा है ।

दिव्यांग छात्राओं को प्रतिमाह 200 रुपये का वजीफा

समेकित शिक्षा के तहत परिषदीय स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा एक से आठवीं तक की दिव्यांग छात्राओं को सरकार प्रतिमाह अधिकतम दस महीने तक दो सौ रुपये वजीफा देगी । इसके लिए छात्रा के पास दिव्यांगता का प्रमाण पत्र 40 फीसदी या उससे अधिक का होना जरुरी है । चयनित छात्राओं की सूची पांच सदस्यीय अनुमोदन समिति करेगी । समिति में डीएम की ओर से नामित मजिस्ट्रेट अध्यक्ष होगा । बीएसए सदस्य सचिव होंगे । जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी, सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी तथा जिला समन्वयक समेकित शिक्षा समिति के सदस्य होंगे । योजना के अंतर्गत जनपद में दो सौ छात्राओं के लिए इस मद में धन स्वीकृत किए गए हैं । छात्राओं का विवरण तय प्रपत्र पर खंड शिक्षाधिकारी, स्पेशल एजुकेटर व फिजियोथेरेपिस्ट से प्राप्त कर जिला समन्वयक समेकित शिक्षा तैयार करेंगे । पांच सदस्यीय समिति के अनुमोदन के पश्चात ही चयनित छात्रा को वजीफा दिया जाएगा ।

4 फीट 2 इंच पैरा-एथलीट और लिम्का रिकॉर्ड धारक के. वाई.वेंकटेश को पद्मश्री से सम्मानित करने के लिए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद सीढियों नीचे उतरे । के.वाई. वैंकटेश चौथे वर्ल्ड ड्वॉर्फ गेम्स में छह पदक जीतकर 2005 में ' लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में अपना नाम दर्ज कराया था ।

-: पैरा-एथलीट हैं के.वाई. वेंकटेश :-

राष्ट्रपति नाथ कोविंद ने पैरा-एथलीट केवाई वेंकटेश को पद्मश्री सम्मान से नवाजा । वेंकटेश ने अपने करियर की शुरुआत साल 1994 में की थी, जब उन्होंने जर्मनी में आयोजित पहले पैरालिंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया था । इसी के साथ 2009 में पांचवे पैरालंपिक खेलों में भारत का नेतृत्व किया था । उस साल देश ने 17 पदक जीते थे । खेल और इसके विकास में उनके अमूल्य योगदान के लिए उनको पद्मश्री से सम्मानित किया गया । वेंकटेश (44) कर्नाटक के बेंगलुरु के रहने वाले हैं । उनकी लंबाई चार फीट दो इंच हैं ।

-: एकोंड्रोप्लासिया बीमारी के थे शिकार :-

जानकारी के मुताबिक पद्मश्री पैरा एथलीट वेंकटेश एकोंड्रोप्लासिया (achondroplasia) नाम की विकास विकार में बाधा लाने वाली एक बीमार है, जो एक हड्डी विकास विकार है, जो बौनापन लाता है । इसी बीमारी से ग्रसित होकर उनके शरीर की वृद्धि 4 फीट 2 इंच पर आकर रुक गई, लेकिन उन्होंने इस बीमारी के आगे घुटने नहीं टेके और जीवन को नया मोड़ देते हुए पैरा एथलीट खेलों में अपने योगदान का मन बनाया ।

-: अपने नाम लिए कई रिकॉर्ड :-

वेंकटेश ने देश को तब गौरवान्वित किया, जब उनका नाम वर्ल्ड ड्वार्फ गेम्स, 2005 में सबसे अधिक पदक जीतने के लिए लिम्का बुक ऑफ रिकॉड्स में दर्ज किया गया था । वह खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले पहले भारतीय एथलीट थे और एथलेटिक्स में पदक जीते थे । बता दें कि पैरालिंपिक की तरह ही, वर्ल्ड ड्वार्फ गेम्स हर चार साल में एक बार आयोजित किए जाते हैं । के.वाई. वेंकटेश ने अपना करियर 1994 में शुरु किया जब उन्होंने बर्लिन, जर्मनी में पहली अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (आईपीसी) एथलेटिक्स विश्व चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया । अब सेवानिवृत्त हो गए, वह कर्नाटक पैरा-बैडमिंटन एसोसिएशन के सचिव के रुप में कार्य करते हैं ।

सिरमौर के द्रष्टिबाधित बेटे ने बनाया इतिहास, देश में 397वा रैंक

सिरमौर के कोलर के रहने वाले मेघावी उमेश लबाना ने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास करने वाले हिमाचल के पहले द्रष्टिबाधित बन गए हैं । उन्होंने अखिल भारतीस्तर पर 397 वा रैंक प्राप्त कर इतिहास रचा है । वर्तमान उमेश दिल्ली के जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में पीएचडी कर रहे हैं । अपनी कैटेगरी में उमेश ने टोप किया है । उमेश लबाना ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में एम की है । सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने वाले उमेश जब शिमला से एम कर रहे थे तो वह पूरी तरह द्रष्टिबाधित होने के बावजूद सारी पढ़ाई लैपटोप के जरिए करते थे । यही नहीं पहले सेमेस्टर में उन्होंने यूजीसी नेट पास कर लिया था और दूसरे सेमेस्टर में जेआरएफ की कठिन पास कर इतिहास बनाया था ।

पांवटा साहिब के कोलर रहने वाले उमेश कुमार के पिता दलजीत सिंह किसान हैं और माता कमलेश कुमारी सेवानिवृत्त शिक्षिका हैं । शाम को उमेश के यूपीएससी परीक्षा पास करने की खबर सिरमौर ही नहीं पूरे प्रदेश में जंगल की आग की तरह फैल गई । लोगों ने उन्हें और उनके परिवार को फोन कर बधाई देने का सिलसिला शुरु कर दिया था ।

द्रष्टिबाधित उमेश ने दिए UPSC क्रैक करने के टिप्स

1. टारगेट पर फोकस
2. क्लीयर कंसेप्ट
3. 10 से 12 घंटे पढ़ाई
4. सेल्फ स्टडी
5. आत्मविश्वास बनाए रखें

गरियाबंद की दिव्यांग बेटी ने लहराया परचम, जीत चुकी ९ मैडल

जिले की प्रीति यादव ने पैरा एथलिटिक में अपनी अपनी पहचान बनाई है । फिंगेश्वर विकासखंड के बरभाठा निवासी 30 वर्षीय प्रीति अब तक 09 राष्ट्रीय पदक जीत चुकी है । वे जल्द ही अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का भी हिस्सा होंगी । उनका चयन फरवरी 2022 के दुबई में आयोजित पैरा एथलिटिक प्रतियोगीता के लिए हुआ है । इसके अभ्यास के लिए अब वे 09 अक्टूबर से साई सेंटर बैंगलोर के लिए रवाना हो रही है ।

प्रीति जिले की एकमात्र ऐसी दिव्यांग युवती है, जिन्होंने 2011-12 से लेकर अब तक पिछले 10 वर्षो से राष्ट्रीय पैरा एथिलेटिक्स और सिनियर राष्ट्रीय पैरा एथिलेटिक चैम्पीयनशीप में भाग लेकर दौड़, लम्बी कूद और गोला फेंक जैसी प्रतियोगिताओं में अनेको बार पदक हासल किया है । प्रीति यादव जन्म से ही दोनों आंखों से द्रष्टिबाधित है । बुलंद हौसलों और अपने सपनों को पूरा करने की लगन ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाया है ।

PARALYMPIC COMMITTEE OF INDIA

Recognised by MYAS, Govt. of India Affiliated Member of : IPC Germany, IWAS UK, APC Dubai

UNDER THE AUSPICIOUS OF

KARNATAKA SPORTS ASSOCIATION FOR PHYSICALLY HANDICAPPED (R)

TAMILNADU PARALYMPIC SPORTS ASSOCIATION

19TH NATIONAL PARA ATHLETICS CHAMPIONSHIPS-2021

Participation Certificate

This is to Certify that

Mr/Ms. PREETI YADAV

of Chhattisgarh State

19th National Para Athletics Championships-2021, from 24th to 27th March 2021

उनकी इस उपलब्धि में उनके कोच निरंजन साहू का भी योगदान है । बातचीत के दौरान प्रीति ने गर्वित होते हुए कहा वह वर्ष 2011-12 से राष्ट्रीय पैरा एथलेटिक खेलो में हिस्सा ले रही है ।

अपनी उपलब्धियों की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि 2011-12 चैम्पीयनशीप में सम्मिलित होकर 100 मीटर दौड़ में रजत पदक, लम्बी कूद में रजत पदक एवं गोला फेंक में कांस्य पदक जीता है । वर्ष 2012-13 में राष्ट्रीय पैरा ऐथलेटिक खेल चैम्पीयनशीप में सम्मिलित होकर लम्बी कूद में रजत पदक, 200 मीटर दौड़ में रजत पदक, 400 मीटर दौड़ में रजत पदक हासिल किया है । वर्ष 2014-15 में पंन्द्रवा सिनीयर राष्ट्रीय पैरा ऐथलेटिक खेल चैम्पीयनशीप में सम्मिलित होकर 200 मीटर दौड़ में रजत पदक प्राप्त किया एवं लम्बी कूद में कांस्य पदक हासिल किया है । वर्ष 2016-17 में सत्रहवाँ सिनीयर राष्ट्रीय पैरा ऐथलेटिक खेल चैम्पीयनशीप में 800 मीटर दौड़ में शामिल हुई एवं वर्ष 2017-18 में अठारहवाँ सिनीयर राष्ट्रीय पैरा ऐथलेटिक खेल चैम्पीयनशीप में 200 मीटर दौड़ में भागीदारी निभायी एवं वर्ष 2020-21 में उत्रीसवाँ सिनीयर राष्ट्रीय पैरा ऐथलेटिक खेल चैम्पीयनशीप में सम्मिलित होकर गोला भेंक में भागीदारी निभायी है ।

उन्होंने बताया कि उनकी इन उपलब्धियो को देखते हुए युवा एवं खेल कल्याण विभाग छ.ग. शासन द्वारा वर्ष 2020-21 में शहीद पंकज विकम खेल सम्मान के लिए प्रीति का चयन किया गया है । जिसे आगामी दिनों में खेल अलंकरण समारोह वर्ष 2020-21 में प्रदान किया जायेगा ।

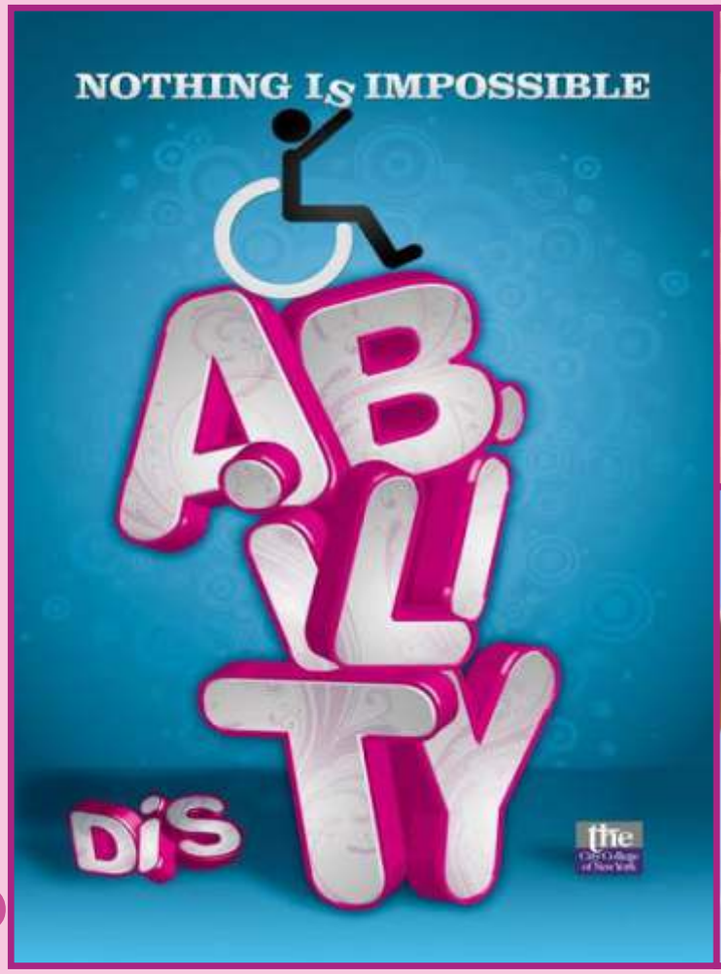

हिन्दुस्तान मिशन शक्ति : दिव्यांगता को मात दे ममता फतेपुर में महिलाओं को दिखा रहीं राह

दोनों पैरों से दिव्यांग फतेहपुर की ममता ने न सिर्फ स्नातक तक की शिक्षा ली बल्कि सिलाई का प्रशिक्षण भी लिया। अब अन्य महिलाओं को सिलाई का हुनर सिखाकर उन्हें आत्मनिर्भर बना रही हैं। करीब 50 महिलाओं को उनके पैरों पर खड़ा कर चुकी हैं। इसके लिए ममता ने कोई आर्थिक सहायता भी नहीं ली। शाह कस्बे की ममता के इस जज्बे को हर कोई सलाम करता है। दोनों पैरों से दिव्यांग होने के बाद भी इनका हौसला काबिल-ए-तारीफ है। खुद को कभी अक्षम नहीं समझा और स्नातक तक की शिक्षा ग्रहण की। बचपन से ही जरुरतमंद महिलाओं की बेबसी दूर करने का जज्बा रहा। चाट का ठेला लगाने वाले अपने पति की मदद के लिए घर में ही सिलाई काम शुरु कर दिया। साथ ही दूसरी महिलाओं को भी सिलाई सिखाकर चार पैसे कमाने को प्रेरित किया। ममता कहती हैं कि दिव्यांग होने के बावजूद कभी हार नहीं मानी। यही मंत्र अन्य महिलाओं को भी देती हैं कि खुद सक्षम बनो ताकि सहारे की जरुरत न पड़े।

1 दिसंबर-WORLD AIDS DAY - विश्व एड्स दिवस

विश्व एड्स दिवस (World Aids Day) हर साल 1 दिसंबर (December 1) को मनाया जाता है । विश्व एड्स दिवस (World Aids Day 2020) का उद्देश्य एचआईवी संक्रमण की वजह से होने वाली बीमारी एड्स के बारे में जागरुकता बढ़ाना है । एड्स (Aids) वर्तमान युग की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक हैं । UNICEF की रिपोर्ट के मुताबिक 37.9 मिलियन से भी ज्यादा लोग HIV के शिकार हो चुके हैं । दुनिया में रोज़ाना हर दिन करीबन 9 8 0 बच्चों एचआईवी वायरस के संक्रमित होते हैं, जिनमें से 320 की मौत हो जाती है, साल 1986 में भारत में पहला एड्स का मामला सामने आया था ।

कैसे हुई विश्व एड्स दिवस (World Aids Day) की शुरुआत ?

विश्व एड्स दिवस (World Aids Day) सबसे पहले अगस्त 1987 में जेम्स डब्ल्यू बुन और थॉमस नेटर नाम के व्यक्ति ने मनाया था । जेम्स डब्ल्यू बुन और थॉमस नेटर विश्व स्वास्थ्य संगठन में एड्स पर ग्लोबल कार्यक्रम (WHO) के लिए अधिकारियों के रुप में जिनेवा, स्विट्जरलैंड में नियुक्त थे । जेम्स डब्ल्यू बुन और थॉमस नेटर ने WHO के ग्लोबल प्रोग्राम ऑन एड्स के डायरेक्टर जोनाथन मान के सामने विश्व एड्स दिवस मनाने का सुझाव रखा । जोनाथन को विश्व एड्स दिवस (World Aids Day) मनाने का विचार अच्छा लगा और उन्होंने 1 दिसंबर 1988 को विश्व एड्स डे मनाने के लिए चुना । **आठ सरकारी सार्वजनिक स्वास्थ्य दिवसों में विश्व एड्स दिवस शामिल है ।**

इन वजहों से होता है एड्स

- अनसेफ सेक्स (बिना कनडोम के) करने से।
- संक्रमित खून चढ़ाने से।
- HIV पॉजिटिव महिला के बच्चे में।
- एक बार इस्तेमाल की जानी वाली सुई को दूसरी बार यूज करने से।
- इन्फेक्टेड ब्लेड यूज करने से।

एचआईवी के लक्षण ? (HIV/AIDS Symptoms)

एचआईवी/एड्स होने पर निम्न प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं...

- बुखार
- पसीना आना
- ठंड लगना
- थकान
- भूख कम लगना
- वजन घटा
- उल्टी आना
- गले में खराश रहना
- दस्त होना
- खांसी होना
- सांस लेने में समस्या
- शरीर पर चकत्ते होना
- स्किन प्रॉब्लम

कॉन्गो में आया था पहला मामला

1959 में अफ्रीका के कॉन्गो में एड्स का पहला मामला सामने आया था, जिसमें कि एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। जब उसके रक्त की जांच की गई तो पुष्टि हुई कि उसे एड्स है। 1980 की शुरुआत में लाखों की तादाद में लोग इस बीमारी से जान गंवा चुके हैं।

एड्स से जुड़ी रोचक जानकारी -

- एड्स पर बनी पहली हॉलीवुड फिल्म का नाम 'एंड द बैंड प्लेन ऑन' था।
- 900 नए बच्चे पूरी दुनिया में हर दिन एड्स का शिकार हो रहे हैं।
- 1986 में भारत में एड्स का पहला मामला सामने आया था।
- 60 डिग्री सेल्सियस से ऊपर तापमान होने पर एचआईवी के विषाणु मारे जाते हैं।

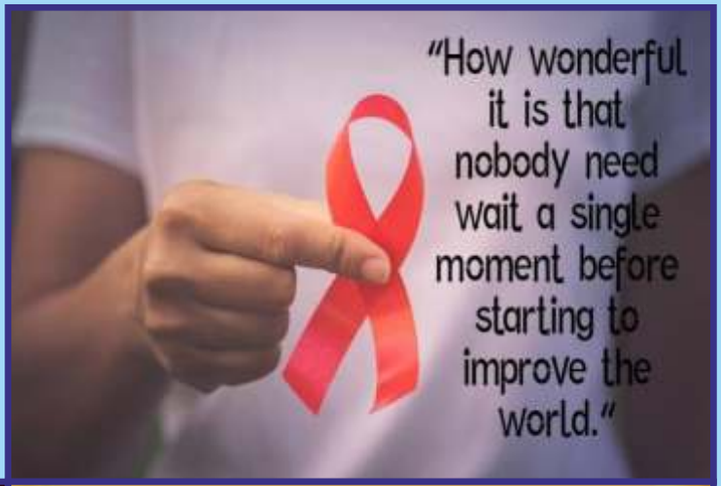

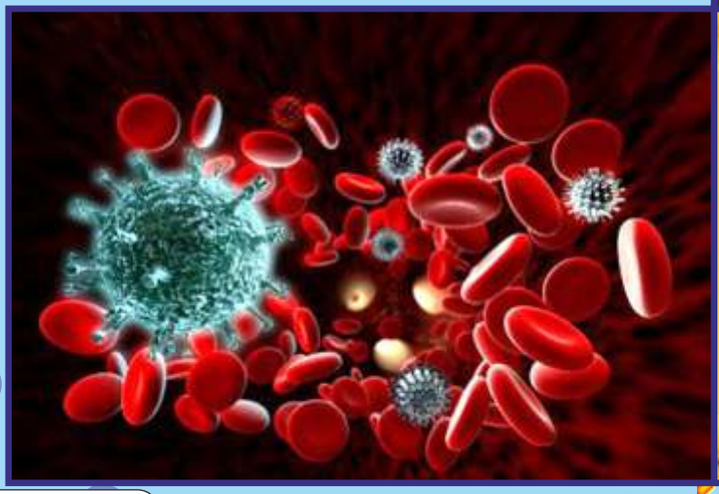

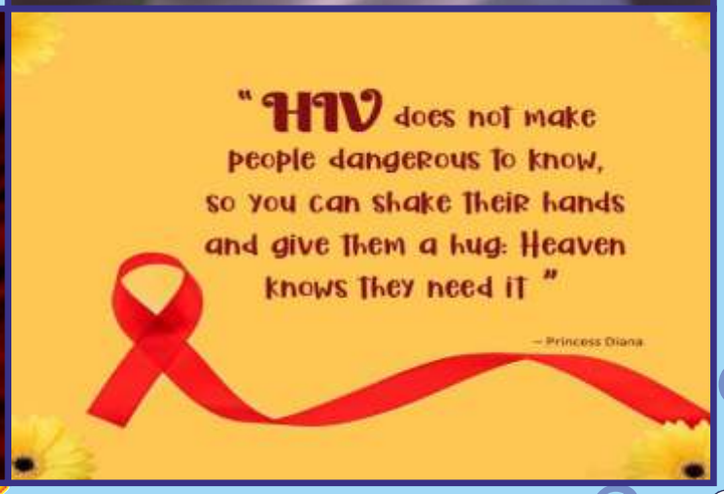

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट
(N.G.O.)
संचालित
ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर
मानसिक दिव्यांग बच्चों के
लिए नि:शुल्क तालीमी संस्था
शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करे
सुमेल ५, हाउस नं.: 48/डी, बिझनेश पार्क,
चामुंडा ब्रीज कोर्नर, असारवा,
अहमदाबाद-380 016
मो. : 99749 55125, 99749 55365